IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पाटलिपुत्र की विरासत के विविध आयाम : एक अवलोकन

डॉ. राणा उदय प्रसाद सिंह
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)
इतिहास विभाग
जगदम कॉलेज, छपरा
जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

शोध सार (Abstract)

बिहार की वर्त्तमान राजधानी पटना का ही पौराणिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक नाम पाटलिपुत्र है। ऐतिहासिक ग्रंथों में इसके अनेक नाम मिलते हैं, वे हैं–पाटलिग्राम, कुसुमपुर, पोलिबोथरा, पुष्पपुर, पालिनफू, पैठना एवं पटना आदि। 1947 में भारत सहस्राब्दी की राजनैतिक गुलामी से तो मुक्त हो गया किंतु गुलामी की मानसिकता से मुक्त नहीं हो सका था। वर्त्तमान दशक में राष्ट्रीय राजनैतिक सत्ता का प्रश्रय प्राप्त कर आज का भारत गुलामी की मानसिकता से आजाद होकर सांस्कृतिक अभ्युदय के लिए अंगड़ाइयां ले रहा है और पहुँचना चाहता है; अपने परम वैभव के उच्चासीन शिखर पर जहां से पूरे विश्व को शस्त्रागार के मुहाने पर खड़े विश्व को 'युद्ध नहीं बुद्ध' के सनातन घोष से गुंजित करते हुए–

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुखभाग्भवेत्।।

का संदेश देकर पूरी वसुधा को स्वच्छ एवं स्वस्थ प्रिय कुटुंब बना सके। उसी परम वैभव का उज्ज्वल प्रतीक है–पाटलिपुत्र।

शब्द कुंजी : पाटलिपुत्र, विरासत, अजीमाबाद, साम्राज्यवाद, पुरावशेष।

भूमिका :

भारत का इतिहास बिहार का इतिहास है। बिहार के इतिहास से ही भारत प्रागैतिहासिक युग से निकलकर ऐतिहासिक युग में प्रवेश करता है और भारत का स्वर्णिम इतिहास निर्मित होता है, कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं। और, इस स्वर्णिम इतिहास का पहला अध्याय पाटलिपुत्र को ही समर्पित किया जाता है। अस्तु, पाटलिपुत्र भारत की विरासत है, और पाटलिपुत्र विरासतों का नगर नहीं महानगर है, इसके जर्रे–जर्रे में स्वर्णिम इतिहास छिपा है।

यक्षों–किरीटों एवं मागधों के पाटलिपुत्र का इतिहास 490 ई. पू. से मिलने लगता है किंतु इसका आरंभिक लिखित साक्ष्य मिलता है, चंद्रगुप्त मौर्य के दरबारी एवं यूनानी राजदूत मेगास्थनीज रचित 'इंडिका' में। वह लिखता है, 'पोलिबोथरा' (पाटलिपुत्र का यूनानी रूपांतर), मौर्य साम्राज्य की राजधानी है। पालिबोथ्रा (पाटलिपुत्र) गंगा और अरेन्नोवास (सोनभद्र–हिरण्यवाह) के संगम पर जहां पर गंगा, घाघरा, सोन और गंडक जैसी सहायक नदियों से मिलती है, वहीं गंगा नदी के दक्षिणी किनारे पर अवस्थित है और काफी ऐतिहासिक महत्व का है। पलिबोथरा 9 मील (14.5 कि. मी.) लम्बा तथा 1.75 मील (2.8 कि. मी.) चौड़ा है। चीन यात्री फाहियान इसको 'पालिनफू' कहता है।

पौराणिक आख्यानों में वर्णित है कि पटना के जनक राजा पत्रक हैं। राजा पत्रक ने अपनी रानी पाटलि के लिये जादू से इस नगर का निर्माण किया और नगर का नाम रखा पाटलिग्राम। पाटलि के पुत्र के नाम पाटलिग्राम 'पाटलिपुत्र' बन गया। पाटलिपुत्र नाम के साथ एक और किंवदंती है कि पाटलिग्राम में गुलाब के फूल जैसी सुगंध वाले पाटलि विशाल के पेड़ों की बहुतायत थी, पाटलि के फूल से तरह–तरह के इत्र, दवा आदि बनाकर उनका व्यापार किया जाता था, पाटलि की प्रसिद्धि के कारण इसका नाम पाटलिग्राम हो गया। अगमकुआँ के पास गांधी सेतु एवं बिस्कोमान कॉलोनी के मिलन विंदु पर पांच सात वर्ष पहले दो पाटलि के वृक्ष थे। सौभाग्य की बात है कि संजय गांधी जैविक उद्यान में रात्रि में पाटलि का पेड़ रात की रानी की तरह आज भी अपनी खुशबू बिखेर रहा है।

अंग्रेजों एवं बंगाल के नवाबों के बीच बंगाल पर विजय का संघर्ष चलता है और अजीमाबाद फिर पटना बन जाता है। 'अजीमाबाद' से पटना बनने के पीछे दो दिलचस्प कहानियाँ प्रचलित हैं। किंवदंती है कि अंग्रेजों ने मीरजाफर, अमीरचंद, दौलत राय और दुर्लभ राय को पटाकर नवाब सिराजुद्दौला को हराया और मीरजाफर को नवाब बनाया। मीरजाफर न तो अंग्रेजों की मांगों को पूरा कर रहा था और जन आकांक्षाओं पर भी खरा नहीं उतर रहा था, इसका लाभ उठाते हुए मीरकासिम ने अंग्रेजों को पटाकर मीरजाफर को हटवाया और स्वयं बंगाल की गद्दी पर बैठ गया। मीरकासिम अंग्रेजों की बेहिसाब नाजायज मांगों से तंग आ गया, ज्यादा दिन तक अंग्रेजों एवं मीरकासिम में पट नहीं सकी और 1763 में अंग्रेजों ने पुनः मीरजाफर को पटाकर मिरकासिम को हटा दिया। पटने–पटाने के बाद हटाने–बैठाने की धींगामुस्ती में 'अजीमाबाद' पटना बन गया।

पाटलिपुत्र से पटना बनने की दूसरी किंवदंती है कि पठान शासक शेरशाह सूरी ने पाटलिपुत्र के सामरिक महत्त्व एवं भौगोलिक स्थिति पर विचार कर एवं बिहार के लोदी सरदारों पर अपनी पैठ (पकड़) बनाने के लिए पटना सिटी में एक सुदृढ़ किला एवं इबादत के लिए एक मस्जिद बनवाया जिसका विस्तार चौक शिकारपुर, श्री गुरू गोबिंद सिंह कॉलेज के पास से मालसलामी तक था। पाटलिपुत्र में पैठ बन जाने के बाद पाटलिपुत्र का नाम पैठना रख दिया। शेरशाह की मृत्यु के बाद अंतिम हिंदू शासक हेमू ने पैठना को पटना कर दिया। पटना में ही माता सती की पीठ/दाहिनी जांघ का हिस्सा गिरा था, जिसको माता के 51 शक्तिपीठों में एक माना जाता है। उक्त शक्ति पीठ स्थल पर मुगल सूबेदार मानसिंह ने पटनेश्वरी अर्थात् पटनदेवी शक्तिपीठ बनवाया, पटनदेवी के नाम के कारण पटना नाम को प्रसिद्धि मिली। कालांतर में मुगल बादशाह औरंगजेब ने 18वीं शती के प्रथम दशक में अपने प्रिय प्रपौत्र एवं बहादुरशाह के पुत्र अजीमुश्शान के नाम पर पटना या पाटलिपुत्र को नामांतरित 'अजीमाबाद' कर दिया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के युद्ध में अजीमाबाद के धन एवं संसाधनों के सहयोग से ही बहादुरशाह दिल्ली का बादशाह बना। डचों ने इसको पटना के नाम से ही प्रसिद्धि दिलाई, जो आज भी चल रहा है, यद्यपि जन समुदाय पटना को पाटलिपुत्र करवाना चाहता है, कथित धर्मनिरपेक्षता के कारण नाम बदलने में सरकारें हिचकिचा रही हैं, किंतु संस्थानों के नामकरण में पाटलिपुत्र का एवं इसकी विरासतों का नामोल्लेख होने लगा है, तात्कालीक उपलब्धि है–पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, आर्यभट्ट ज्ञान–विज्ञान विश्वविद्यालय, चाणक्य लॉ कॉलेज एवं चंद्रगुप्त प्रबंध संस्थान की स्थापना।

पाटलिपुत्र की स्थापना का श्रेय महान् साम्राज्यवादी शासक अजातशत्रु एवं एसके पुत्र उदयन को है। अजातशत्रु वैशाली को जीतना चाहता था, राजगृह से वैशाली को पराजित करना और उस पर नियंत्रण रखना संभव नहीं था, इसलिए उसने गंगा एवं सोन के संगम पर पावन गंगा की उर्वर भूमि में उगे विशालकाय 'पाटलि' पेड़ के सुरम्य झुरमुटों के बीच तत्समय के पाटलिग्राम की सुलभ आम्र और पाटलि के काष्ठ खंभों से किलेबंदी कर बेस–कैम्प (सैनिक–छावनी) के रूप में उपयोग कर वैशाली को पराजित किया। बेस कैम्प के चतुर्दिक सुंदर परिदृश्य एवं पाटलि की मादक सुगंधी से अभिभूत हो उसके पुत्र उदयन ने राजगृह के स्थान पर पाटलिग्राम के किले को ही अपनी राजधानी बनाकर पाटलिपुत्र को वैभव प्रदान किया। महान् नन्द शासकों के काल में इसका और भी विकास हुआ। मौर्य साम्राज्य के उत्कर्ष के साथ पाटलिपुत्र भारतीय उपमहाद्वीप में सत्ता एवं ज्ञान का केन्द्र बन गया। मौर्य काल के आरंभ में पाटलिपुत्र के अधिकांश महल लकड़ियों से बने थे, सम्राट अशोक ने नगर को ईंट–प्रस्तर की शिलाओं की संरचना में तब्दील किया। ज्ञान की खोज में कई विदेशी यात्री यहाँ आए, देश प्रसिद्ध विद्वान पाटलिपुत्र की विद्वत् सभा की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही देशव्यापी प्रसिद्धि पाते थे। यहाँ तक कि पाणिनि को अपनी महत्ता जताने के लिए पाटलिपुत्र की विद्वत् सभा में पहुँचकर परीक्षा देनी पड़ी। पाटलिपुत्र के सम्राट पुष्यमित्र शुंग के राजपुरोहित पतंजलि ने अपने महाभाष्य से पाणिनि को प्रसिद्धि दिलाई। मौर्यों के पश्चात् कण्व, शुंग और शक सहित अनेक अल्पजीवी शासक आये लेकिन इस नगर का महत्त्व कम नहीं हुआ। इनके पश्चात् गुप्त वंश आया। गुप्त राजाओं ने यहीं से भारतीय उपमहाद्वीप पर शासन किया। गुप्त वंश के शासनकाल को प्राचीन भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है। उत्तराधिकारी चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने पारिवारिक तथा राजनैतिक गृह कलह तथा हूणों द्वारा मचाये जा रहे उत्पात के प्रतिकार के लिए प्रयाग और उज्जयिनी को अस्थायी राजधानी बनाया जो पाटलिपुत्र के गौरवगाथा का काला अध्याय सिद्ध हुआ। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद इस नगर का ही नहीं भारत का भी गौरव धूमिल हो गया जो अब तक नहीं मिल पाया है। पटना का भविष्य काफी अनिश्चित रहा। 12वीं सदी में बख्तियार खिलजी ने बिहारश्री पर नियंत्रण के लिए जाते समय मार्ग में पड़ने वाले पाटलिपुत्र के अनेक सांस्कृतिक–आध्यात्मिक प्रतिष्ठानों को भी तहस–नहस कर दिया।

पूर्व में संकेतित है कि पटना अर्थात् पाटलिपुत्र विरासतों का महानगर है, इसके जर्रे–जर्रे में गौरवशाली इतिहास की विरासतें गर्भ–तल दोनों जगह यत्र–तत्र सर्वत्र छिपी हुई है। इसीलिए पाटलिपुत्र के केंद्र–स्थल कुम्हरार पार्क के 1.75 मील त्रिज्या के वृत्तीय क्षेत्र को पुरातात्त्विक विभाग ने बिना अनुमति 15 फीट से अधिक गहराई में उत्खनन के लिए प्रतिबंधित कर रखा है।

पाटलिपुत्र की विरासत पर चर्चा करने के पूर्व पाटलिपुत्र के विस्तार को जान लेना भी आवश्यक है। अति प्राचीन पाटलिपुत्र का विस्तार दीदारगंज से गांधी मैदान के सलीमपुर अहरा तक माना जाता है, उत्तर में गंगा नदी होने के कारण पाटलिपुत्र का उत्तर में विस्तार तो नहीं हो सका, शेष दिशाओं में विस्तार हुआ है। पूर्व में फतुहा, पश्चिम में फुलवारीशरीफ, दानापुर से मनेर तथा दक्षिण में पुनपुन नदी के तट पर गौरीचक तक। गौरी चक से ही पितरों के पिण्डदान का शुभारंभ होता है, पुण्य सलिला पुनपुन नदी में स्नान के बाद मुंडन के साथ।

पाटलिपुत्र की भू आकृति पटल (परवल) और प्लेट (तश्तरी) की तरह है। पटल के सदृश अण्डाकार एवं प्लेट की तरह किनारे में उठान और मध्य में धसान जैसी है, के कारण ही पटना नगर को जल जमाव की भयंकर समस्या से सदैव जूझना पड़ा है। अमेरिकी पुरातत्त्वविद् डेविड ब्रेनार्ड स्पूनर ने 1912–1913 में खुदाई में राख का अवशेष प्राप्त कर निर्णय दिया था कि शुंग शासन काल में मौर्य महल जल गया था जिससे गौतम बुद्ध की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होती है कि नगर का भविष्य उज्ज्वल होगा, बाढ़ और आग के कारण नगर को खतरा बना रहेगा।

आलेख का विषय पाटलिपुत्र की विरासतें हैं, पटना एवं इसके आसपास के प्राचीन भग्नावशेष, खंडहर एवं नगर के विभिन्न मुहल्लों के नाम ऐतिहासिक गौरव के मौन गवाह हैं तथा नगर की प्राचीन गरिमा को आज भी प्रदर्शित करते हैं। सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्रशासनिक महत्त्व के अतिरिक्त, पटना शिक्षा, चिकित्सा, और वाणिज्यि का भी एक प्रमुख केन्द्र रहा है। प्राचीन बौद्ध और जैन तीर्थस्थल वैशाली, सोनपुर, राजगीर, मनेरशरीफ, राजगृह, नालन्दा, बोधगया और पावापुरी पटना शहर के आस–पास ही अवस्थित हैं, जिनके बनने–बिगड़ने में पाटलिपुत्र का योगदान रहा है। पाटलिपुत्र से तनिक भी भटकाव आलेख को ग्रंथकार बना देगा। अतएव हमारा अध्ययन मेगास्थनीज के भौगोलिक विस्तार दीदारगंज से मध्यकालीन मुगलों के विस्तारफलक फुलवारीशरीफ तक की विरासतों पर ही केंद्रित रहेगा। अध्ययन के लिए मोटे तौर पर इसे धार्मिक–गैर धार्मिक, प्राचीन–अर्वाचीन, राजनैतिक–सांस्कृतिक एवं हिंदू, सिक्ख, इस्लाम और ईसाई संप्रदाय की विरासतों में बांट सकते हैं, किंतु सरलता के लिए श्रेणीबद्ध न कर साईट (पुरातात्त्विक स्थल) एवं समय (आद्य से मध्यकाल तक) के नजरिये से विरासतों का उल्लेख करेंगे।

पाटलिपुत्र का किला, राजप्रसाद एवं राजवाटिका–पाटलिपुत्र काष्ठ किले में बसाया गया था। किले की चहारदीवारी में पाटलिपुत्र का सबसे पुराना क्षेत्र पटना सिटी या पटना साहिब है। जिसके एक छोर पर दीदारगंज और दूसरे छोर पर कुम्हरार एवं मुसल्लहपुर हाट तक का क्षेत्र था।

कुम्हरार पार्क की पहचान मौर्य राजप्रसाद के रूप में हुई है। जिसका विस्तार अमेरिकी पुराविद् स्पूनर के अनुसार धनुकी मोड़ से लेकर नया टोला तक विस्तीर्ण बुलंदी बाग में था, पाटलि पेड़ों से आच्छादित बुलंदी बाग के संबंध में मान्यता है कि यह राजवाटिका थी। बुलंदी बाग को फिर से पुनर्जीवित करने का प्रयास किया गया है, चहारदीवारी के भीतर एक सुंदर पार्क विकसित किया गया है। परिसर भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित तथा संचालित है और सोमवार को छोड़ सप्ताह के हर दिन 10 बजे से 05 बजे तक खुला रहता है। प्रातः एवं सायंकाल में तो स्वास्थ्य लाभ के लिए बुजुर्गों के ठहाके गूंजते हैं, बूढ़ी–थकी हड्डियों में जोश का संचार होता है।

राजमहल लकड़ी का बना हुआ था। सम्राट अशोक ने पत्थर एवं ईंट से इसे निर्मित करवाया। प्रस्तर एवं ईंट से महल बनाने की कला संपूर्ण भारत को मौर्यों की देन है। पुरातात्त्विक साक्ष्य बताते हैं कि मौर्य महल 80 एकाश्म (Monolithic) प्रस्तर खंभों पर टिका हुआ था तो कतिपय पुराविदों ने इसकी पहचान सभा–भवन (असेम्बली हॉल) के रूप में की है, इसी असेम्बली हॉल में तृतीय बौद्ध संगति हुई थी। हॉल आयताकार है, चारों तरफ से खुला हुआ है। स्तंभ 10 और 08 की संख्या में व्यवस्थित हैं। प्रत्येक स्तंभ के बीच का अंतराल 4.57 मीटर है। स्तंभ धरातल से 9.75 मीटर ऊपर तथा 2.74 मीटर जमीन की सतह के नीचे है, एक ही प्रस्तर–खण्ड के बने हैं। ये खंभे पुरातात्त्विक महत्त्व के साथ–साथ तद्युगीन वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास की गौरवमयी गाथा कहते हैं, ये खंभे चुनार की पहाड़ियों के श्याम बलुआ पत्थर को काटकर–तराशकर बनाये गये थे। इन प्रस्तर स्तंभों को चुनार में बनाकर पटना में लाना, परिवहन तंत्र के उन्नतावस्था की उज्ज्वल गाथा है।

राजमहल एक किले में था। किले का विस्तार कुम्हरार, गुलजारबाग, मेंहदीगंज, रानीपुर, बेगमपुर से लेकर मालसलामी तक था। इसका प्रमाण पूरब दरवाजा मालसलामी, पश्चिम दरवाजा गुलजार बाग में ओरियण्टल कॉलेज के समीप एवं मेंहदीगंज के पास रानीपुर खिड़की का पाया जाना है। किले के भीतर अवशेषों की विपुल मात्रा है, जिनका उल्लेख मेगास्थनीज, डिमाक्लिस, टालेमी, फाह्यान, ह्वेनत्सांग, इत्सिंग, धर्मास्वामिन, वर्नियर, चारनोक, मैनरीक, पीटर मुंडी और मनुची ने तथा उत्खनन लारेंस वाडेल, डेविड ब्रेनार्ड स्पूनर, के. पी. जायसवाल एवं अल्तेकर के निर्देशन में 1890 के दशक से 1955 तक हुआ। उत्खनन से प्राप्त अवशेषों का अधिकांश कुम्हरार पार्क में अवस्थित संग्रहालय में सुरक्षित है, कुछ अवशेष पटना संग्रहालय में, अधिकांश अवशेष बिहार एवं देश–विदेश तक के निजी एवं सरकारी संग्रहालयों में सुरक्षित हैं।

आरोग्य बिहार : उत्खनन के दौरान आरोग्य बिहार का अवशेष मिला है, मान्यता है कि इसी आरोग्य बिहार में कनिष्क के काल में औषधि विज्ञान के जनक वैद्यराज चरक रोगियों का उपचार करते थे। मान्यता तो यह भी है कि इस आरोग्यशाला की स्थापना आदि आयुर्वेदाचार्य धनवंतरी की अध्यक्षता में की गई थी। धनवंतरी ने ही काशी नरेश को अमृत प्रदान कर काशी को अमरत्व प्रदान किया था।

चाणक्य की साधना स्थली : आरोग्य बिहार के बगल में चाणक्य की साधना स्थली है। चौकोर साधना पीठ एवं दीप स्तंभ है। इसी स्थान पर मान्यता है कि नंदवंशी महान् शासक महापद्मनंद के समय में पाणिनी पाटलिपुत्र की विद्वत् सभा में परीक्षा के लिए उपस्थित हुए थे और परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उनको देशव्यापी प्रसिद्धि मिली। चाणक्य की कुटिया यहाँ से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर आज के गुलजारबाग के मीतन घाट में थी, जहाँ पर वे स्नान–ध्यान एवं गंगा मैया की आराधना कर विश्राम पाते और सारे वैयक्तिक कृत्यों को निपटाकर राजमहल में आते।

दुरूखी देवी मंदिर : 1890 के दशक में लारेंस को कुम्हरार पार्क की खुदाई में नक्काशीदार स्तूप के पत्थर की रेलिंग का एक टुकड़ा मिला, जिसके दोनों रूख पर आमने–सामने दो महिलाओं की आकृतियाँ थीं, इन्हें प्रजनन देवी दुरूखी या दुरुकिया देवी की मूर्त्ति माना जाता है और संतान के लिए पूजा–अनुष्ठान करती हैं। इस विग्रह (मूर्त्ति) को कुम्हरार पार्क के बगल में ही नया टोला में दुरूखी मंदिर में स्थापित किया गया है। इसकी प्रतिकृति को पटना संग्रहालय में भी रखा गया है।

अगम कुआँ एवं शीतला माता मंदिर : कुम्हरार किले की परिधि में ही कुम्हरार पार्क एवं गुलजार बाग स्टेशन के बीच सम्राट अशोक के काल का कुआँ है। कुएं की गहराई अगम और अथाह होने के कारण ही इसका नाम अगम कुआँ है। कुआँ की निर्मिति 105 फीट है जिसमें ऊपर का 43 फीट ईंट का और शेष 62 फीट कदम की लकड़ी के बने हुए छल्ले का है। अगम कुआँ का दूसरा नाम 'नरक कुआँ' भी है। बौद्ध ग्रंथों में वर्णित है कि अशोक ने अपने 99 भाइयों की हत्या कर इसी अगम कुएं में डाल दिया था। कुआँ कभी सूखा नहीं है। बिहार के मुख्यमंत्री श्री लालू यादव ने इसकी साफ–सफाई के चार दमकल लगाये किंतु पानी का स्तर तनिक भी नहीं खिसका, इस घटना ने लोक आस्था को प्रमाणित कर दिया कि कुआँ का जल–स्रोत गंगा मैया हैं, जो गुलजारबाग के उत्तर में गंगा के मीतन घाट के पास है। अगम कुआँ प्रांगण में ही लोकदेवी शीतला माता का मन्दिर है, इस मंदिर के अंदर सप्तमातृकाओं (सात मातृ देवी) के पिंडों की पूजा होती है। चेचक और चिकन पॉक्स के इलाज के लिए, शीतला देवी की वंदना की जाती है। गुलजार बाग का भी अपना एक इतिहास है, जिसको मिरकासिम के भाई गुलजार ने बसाया था। गुलजारबाग में ही जैन संत सेठ सुदर्शन ने कंवलदह में कायोत्सर्ग किया था।

दीदारगंज की यक्षिणी : 1917 में दीदारगंज के आहर के धोबीघाट पर कपड़ा धोने में प्रयुक्त किये जाने वाले पाट को जो एक यक्षिणी की थी को एक पुराविद ने देखा। यक्षिणी की बनावट, बुनावट एवं कारीगर की कारीगरी पर मुग्ध पुराविद् ने इस मूर्ति के महत्त्व को समझा और पटना म्यूजियम को सूचित किया। कार्बन डेटिंग से ज्ञात हुआ कि बलुआ पत्थर की 5 फीट ऊँची यह मूर्त्ति ईसापूर्व तीसरी शताब्दी की मौर्यकालीन कृति है। इसका बायाँ हाथ टूटा हुआ है तथा दाहिने हाथ में एक चामर है, इसलिए इसे चामरधारिणी यक्षिणी भी कहा जाता है। यक्षिणी की मुद्रा सजीव एवं स्वाभाविक है। केशराशि गूँथी हुई है, कलाई में चूड़ियाँ तथा गले में मुक्तामाल है। लहरियादार मुक्ता–माला यक्षिणी के पुष्ट वक्ष पर लटक रही है। मूर्त्ति अर्द्धनग्न है, उपरी हिस्सा वस्त्रविहीन है, अधो भाग में श्रोणि से नीचे कलात्मक ढंग से साड़ी बँधी हुई है। संप्रति यह पटना संग्रहालय में रखी गई है। 2017 में यक्षिणी प्राप्ति का शताब्दी समारोह मनाया गया। इस विश्व प्रसिद्ध यक्षिणी को पटना के लोगों को इसकी महत्ता से परिचित कराने का आंशिक श्रेय आलेखकार को भी मिला है, जब उसने 2010 में यूजीसी संपोषित सेमिनार 'हिंदी साहित्य और आधी दुनिया : नारी केंद्रित लेखन' में उपलब्ध कराये गये संग्रहों को साहित्योतिहास में स्त्री विमर्श के नाम से प्रकाशित वृहदाकार संकलन एवं स्मारिका के आवरण पर यक्षिणी का चित्र छपवाकर प्रकाशित किया और अतिथियों को पटना म्यूजियम की बनी प्लास्टर ऑफ पेरिस की यक्षिणी की मूर्त्ति प्रदान कर स्वागत किया था, संयोजकीय वृत्त निवेदन एवं संवाददाता सम्मेलन में विस्तार से यक्षिणी पर चर्चा भी हुई थी, प्रशंसित हुआ और बिहार तथा बिहार से बाहर के लोगों ने इस मूर्त्ति के महत्त्व को जाना।

शेरशाह का किला या किला हाउस (जालान हाउस) : पाटलिपुत्र का मध्यकाल में सबसे उत्कृष्ट समय शेरशाह का पटना में 1541 में आगमन से हुआ। पटना के भौगोलिक एवं सामरिक महत्त्व को देखते हुए उसने गुरुद्वारा के ठीक सामने चौक शिकारपुर थाना के बगल में गंगा के तीर पर अफगान शैली में एक मस्जिद एवं किला बनवाया। मस्जिद अभी विद्यमान है और यह पटना की सबसे बड़ी मस्जिद है। इसी मस्जिद के पश्चिम छोर पर अजीमुश्शान की बेगम की मजार है, जो एक मारवाड़ी व्यवसायी परिवार के नियंत्रण एवं देखरेख में है, मारवाड़ी परिवार इसे बरक्कत देने वाले मजार की शक्ल में हिंदू और इस्लामिक रीति से पूजा–इबादत करता है। बरक्कत इस मजार की पूजा से मिली है कि परिवार के कठिन परिश्रम से, कुछ कहना उचित नहीं है क्योंकि आस्था का सवाल है। मस्जिद से लेकर हाजीगंज में श्रीगुरू गोबिंद सिंह कॉलेज के बगल में शेरशाह का किला है, आज वह उस रूप में नहीं है जैसा शेरशाह ने बनवाया था। जीर्ण किले का दीवान बहादुर राधाकृष्ण जालान द्वारा पुनरूद्धार किया गया और यह जालान हाउस, किला कोठी और कालादारी महल के नाम से जाना जाने लगा है। जिसमें हीरे–जवाहरात तथा चीनी वस्तुओं का एक निजी संग्रहालय है। किले का विस्तार मालसलामी तक था। मालसलामी कभी पटना के लिए बंदरगाह का काम करता था। यहाँ से बाहर भेजे जानेवाले माल बिना सलामी अर्थात् चुंगी दिये नहीं लाये–भेजे जा सकते थे, इसीलिए इस मुहल्ले का नाम ही पड़ गया मालसलामी। मालसलामी के बगल में ही मारूफगंज एवं मंसूरगंज है, जो सूफी संत मारूफ एवं मंसूर के नाम पर बसा हुआ है। जो बिहार ही नहीं एशिया की सबसे बड़ी किराना मंडी है।

तख्त श्रीहरमंदिर साहेब : सिक्खों के आदि गुरू नानकदेव का 1509 ई. में पटना के गायघाट में आगमन हुआ था, जिस स्थान पर उन्होंने अपने शिष्यों को दीक्षित किया, वह स्थान बड़ा गुरुद्वारा कहलाता है। नवें गुरू तेगबहादुर पत्नी गुजरी के साथ पटना में आए हुए थे। औरंगजेब के सेनापति को सैन्य सहयोग देने के लिए असम जाना पड़ा। पत्नी गुजरी को भाई कृपालचंद सिंह के संरक्षण में छोड़कर असम चले गये। 26 दिसम्बर, 1666 को सिक्खों के दसवें गुरु गोविंद सिंह जी उर्फ गोविंद राय उर्फ बाला प्रीतम का जन्म हुआ। गुरू गोविन्द के जन्म स्थली पर ही 105 फीट का सात मंजिला गुरुद्वारा अवस्थित है, जिसे तख्त हरमंदिर साहेब कहते हैं। गुरुद्वारा में ही गुरू का कुआँ है जिसका जल अति पवित्र माना जाता है, श्रद्धालु इसका जल छककर अपने जीवन को धन्य करते हैं। गुरुद्वारा के सटे बाललीला उर्फ मौनी संगत है। बाल लीला में बालक गोविन्दराय के बचपन का पंगुरा (पालना), तलवार, लोहे के चार तीर, पादुका तथा 'हुकुमनामा' सुरक्षित है। 1674 में तेगबहादुर के आदेश से गुरु गोबिंद सिंह आनंदपुर चले गये।

तख्त श्रीहरमंदिर साहिब के कारण पटना को विश्वव्यापी प्रसिद्धि मिली है। प्रतिवर्ष 26 दिसम्बर को प्रकाश पर्व मनाया जाता है जिसमें देश–विदेश से लाखों सिक्ख श्रद्धालु यहाँ आते हैं। वर्ष 2016 में 350वाँ प्रकाश वर्ष मनाया गया सारे संसार से लाखों श्रद्धालुओं ने सिक्ख समुदाय से संबंधित पवित्र स्थलों का दर्शन किया। गुरुद्वारा साहिब में प्रति वर्ष अरबों का चढ़ावा चढ़ता है जिससे अनेक जन कल्याणकारी कार्य गुरुद्वारा प्रबंध समिति के द्वारा चलाया जाता है।

पटना में हरमंदिर, गुरु गोबिंद एवं तेगबहादुर की संस्मृतियों एवं गतिविधियों को संजोनेवाले स्थलों में महत्त्वपूर्ण हैं, गुरु का कुआ, गुरु का बाग, बाल लीला उर्फ मौनी संगत, कंगनाघाट और गुरुद्वारा हांडी साहिब आदि। ये स्थल सिक्खों के लिए अति पवित्र हैं और हर सिक्ख का इन स्मृतियों का दर्शन करना जीवन का सपना होता है।

गुरु का बाग एवं कुआँ : असम से लौटते समय तेगबहादुर ने हरमंदिर से साढ़े तीन किलोमीटर दूर कटरा में जिस स्थान पर डेरा डाला था, वह गुरु का बाग कहलाता है। इसमें कुआँ, सरोवर तथा बागीचा है। कुएं तथा सरोवर के संबंध में मान्यता है कि इसके जल से स्नान करने पर चर्म रोग से मुक्ति मिलती है, पीने से अनेक व्याधियों से मुक्ति मिलती है तथा बाग में पौधा लगाने से मुरादें पूरी होती हैं।

गुरुद्वारा कंगनघाट : गंगा नदी के तट पर तीन जिलों पटना, सारण और वैशाली की सीमाओं के संगम पर गंगा के किनारे कंगनघाट है। कंगनघाट गुरु गोबिंद सिंह जी की बाल लीला से जुड़ी अनेक स्मरणीय घटनाओं को समेटे हुए है। कहा जाता है कि गुरु जब चलने फिरने लगे तभी से कंगनघाट पर गंगा की लहरों से खेलने में उनका अधिकांश समय बीतता था, गुरु गोबिंद सिंह का एक अच्छा तैराक होना इस कथ्य को प्रमाणित भी करता है। कहा जाता है कि एक बार प्रीतम बाला घाट पर नहा रहे थे तो उनके एक हाथ का कंगन गंगा में गिर गया। माता गुजरी ने कंगन के बारे में पूछा तो गुरु ने अपना दूसरा कंगन गंगा मैया में फेंककर बताया कि वहाँ है। तब से मान्यता रही थी कि जो भी कंगनघाट में डूबकर कंगन खोजता है, उसे स्वर्ण कंगन मिलते रहा किंतु एक लोभी श्रद्धालु के कारण गंगा मैया ने बाद में कंगन लौटाना बंद कर दिया। जो भी सिक्ख श्रद्धालु गुरुद्वारा साहिब में मत्था टेकने आता है, वह अवश्य ही इस घाट पर स्नान कर परिक्रमा करना अपना सौभाग्य समझता है।

गुरुद्वारा हाँडी साहिब उर्फ जमुनी की कुटिया : गुरु तेगबहादुर जी के आदेश पर गुरु का परिवार आनंदपुर साहिब लौट रहा था। पहला पड़ाव दानापुर के उत्तर–पूर्व में गंगा के तट पर जमुनी माई की कुटिया में डाला गया। कुटिया स्वामिनी जमुनी उस दिन खिचड़ी बनायी थी। भूखे बालक गोबिंद एवं सहयोगियों को खिलाने के लिए परेशान हो उठी। जमुनी की परेशानी को भाँपकर गुरु ने खिचड़ी की हाँडी को कपड़े से ढँक दिया और उसे ढँककर ही खिचड़ी खिलाते जाने का निवेदन किया। माता जमुनी खिचड़ी खिलाती रही और सभी लोग खाकर तृप्त हो गये, खिचड़ी कम नहीं हुई। जो भी सिक्ख श्रद्धालु पटना आते हैं, इस गुरुद्वारा में गुरु गोबिंद सिंह के बाल्यकाल की पादुका का दर्शन और हाँडी की खिचड़ी का प्रसाद पा लेना अपना सौभाग्य मानते हैं।

मीर अशरफ की मस्जिद : बाल लीला के पिछवाड़े मीर अशरफ की मस्जिद है। आज इसे उपहासवश कबूतरों का डेरा मस्जिद के नाम से भी जाना जाता है। इसकी स्थापना गैबी फरिस्ते के आदेश पर मीर अशरफ नामक बली ने हुजरा इबादत के लिए 1763 ई. में करवायी थी। जिसका विस्तारीकरण 1773 में पुए की गली वाले नवाब अली शाह ने करवायी। इस मस्जिद की खास विशेषता यह है कि अपने स्थापत्य में यह पूरी तरह से अयोध्या के बाबरी मस्जिद का लघु संस्करण है। मस्जिद के प्रांगण में शट्कोणीय वजुखाना है जिसके जल का प्रयोग वजु करने में किया जाता है, आज यह गंदे तालाब में तब्दील हो गया है। प्रशासन के आदेश से यह मस्जिद सिर्फ जुम्मे की नमाज के लिए शुक्रवार को खुलती है, शेष दिनों में यह मस्जिद भारतीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा नियुक्त हिंदू कर्मचारियों के द्वारा इस मस्जिद की देखरेख, हिंदू–मुस्लिम ऐक्य की इस मिसाल पेश करते हुए शायर की इस उक्ति को चरितार्थ करती है–

'अब लुत्फ तब है यारों, एक जश्न यूँ मनायें।
मस्जिद को तुम सजाओ, मंदिर को हम सजाये।।

जल्ला मंदिर : पटना साहिब स्टेशन से मात्र दो सौ मीटर की दूरी पर जल्ला क्षेत्र के बाहरी बेगमपुर में जल्ला का प्रसिद्ध हनुमान मंदिर है। इस मंदिर की प्रसिद्धि यह रही है कि इस्लामिक युग में इस मंदिर को जला दिया गया था, जलने के कारण मूर्त्ति का रंग काला हो गया था, हाल के वर्षों तक हनुमान जी का जला हुआ काला विग्रह ही स्थापित था। जीर्णोद्धार के बाद सिंदूरी रंग से रंगकर सिंदूरी बना दिये गये हैं। धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष आचार्य किशोर कुणाल के मार्गदर्शन में जन सहयोग से आज यह मंदिर भव्यता में पटना के हनुमान मंदिर से भी आगे और पटना का सबसे बड़ा मंदिर बन गया है। पटना सिटी में ही मउरी गली में प्रसिद्ध काले हनुमान का मंदिर है। अब पटना में एक मात्र यही हनुमान मंदिर है जिसके विग्रह का रंग काला है।

बेगू हज्जाम की मस्जिद : पटना की सबसे प्राचीन मस्जिद है, जो खाजकला में है। अलाउद्दीन हुसैन शाह ने 1489 में हुसैनी मस्जिद का निर्माण करवाया था। 1646 में बेगू नामक हज्जाम ने इस मस्जिद का पुनरूद्धार करवाया तब से यह बेगू हज्जाम की मस्जिद के नाम से जाना जाता है। बेगू हज्जाम की मस्जिद के समीप ही औरंगजेब की मस्जिद है।

मंगल तालाब : मंगल तालाब का इतिहास मौर्यकालीन सरीखा पुराना है, जो उस काल में मानसरोवर कहलाता था। यह सरोवर विशाल था। मौर्य किले के अंदर था। चारों तरफ से हरे–भरे पेड़–पौधों से घिरा था। तालाब का विस्तार रानीपुर खिड़की से लेकर पश्चिम दरवाजा तक था। राजमहल की स्त्रियाँ इस तालाब में स्नान करती थीं। गुप्तकाल में इस सरोवर के चारों तरफ अनेक मंदिर बन गये। पाटलिपुत्र के वैभवविहीन होने के साथ ही यह तालाब भी अतिक्रमण का शिकार हुआ। 18वीं शती में मुगल सैनिक शेख मिट्ठू मियाँ ने वर्त्तमान में जहाँ मंगल तालाब है, मिट्टी के

लिए वहाँ की खुदाई करवायी। जमीन के भीतर से काफी बेशकीमती पत्थर मिले। बाद में इस स्थान की मैक क्रिण्डल ने खुदाई करवायी। खुदाई में अनेक प्राचीन अवशेष मिले, जो पटना म्यूजियम में रखे हुए हैं। पटना के तत्कालीन जिलाधिकारी मैंगल्स ने इस सरोवर को अतिक्रमण मुक्त करवाकर तालाब का स्वरूप दिया। उसके बाद इसको मैंगल्स टेंक कहा जाने लगा। मैंगल्स का विभ्रष्ट रूप मंगल और टेंक का तालाब कर दिया गया और मंगल तालाब नाम पड़ गया। नीतीश सरकार में स्थानीय विधायक ने इस तालाब का सौंदर्यीकरण किया और मैंगल्स के अंतिम अंग्रेजी अक्षर S के उल्टे आकार में बनवाया। अतिक्रमणों के बावजूद इस तालाब की परिधि लगभग एक किलोमीटर है। सिक्खों के प्रकाशोत्सव के अवसर पर यह तालाब अपनी पूरी रवानी पर होता है, लाईट एण्ड साउण्ड के माध्यम से गुरू गोबिंद सिंह जी की जीवन लीला देश–विदेश के कोने–कोने से आये श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर देती है। इस तालाब में जुलाई से मार्च–अप्रैल तक नौकायन का आनंद लेते हैं।

पादरी की हवेली : बिहार का प्राचीनतम कैथोलिक चर्च है, जिसका निर्माण 1713 ई. में हुआ था। चर्च मरियम को समर्पित होने के कारण 'ब्लेस्ड वर्जिन मैरी का चर्च' भी कहलाता है। चर्च के बगल में ही ईसाइयों का कब्रिस्तान है। कब्रिस्तान बंगाल के नवाब मीर कासिम तथा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच की कड़वाहटों का गवाह है। मीरकासिम ने इस चर्च में शरण लिये पटना के अंग्रेज अधिकारी एलिस, पटना के नायब रामनारायण, ढाका के नवाब दुर्लभ राय, जगत सेठ बंधु, सेठ अमीचंद एवं मीरचंद आदि 47 अंग्रेज एवं भारतीय दगाबाजों–अधिकारियों एवं सैनिकों का, अपने सिपहसालार जर्मन रेहन हर्ड उर्फ सुमरू के हाथों भयंकर कत्लेआम करवाकर चर्च को तहस–नहस कर दिया। 1772–73 में फादर जोसेफ ने जीर्णोद्धार करवाया। इस चर्च का महत्त्व यह भी है कि शांति के लिए नोबेल पुरस्कार पाने वाली संत मदर टेरेसा ने इसी चर्च में नर्सिंग का प्रशिक्षण लिया और कोलकाता में बस गई। कलकत्ता में मिशनरिज ऑफ चैरिटीज एवं पादरी की हवेली में सिस्टर ऑफ चैरिटी की स्थापना कर सेवा का संकल्प लिया।

गुलजारबाग प्रिंटिंग प्रेस : गुलजार बाग प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना 1774 में डचों ने की थी। बिहार की यह सबसे बड़ी एवं प्राचीनतम सरकारी प्रेस है। आरंभ में यह डच फैक्टरी थी जिसमें नील और अफीम का गोदाम था। इसीलिए इसे अफीम घर और नील घर के नाम से भी जाना जाता है। सरकारी नक्शे का यह मात्र सरकारी प्रतिष्ठान है।

पत्थर की मस्जिद : सुल्तानगंज में अशोक राजपथ के किनारे पत्थर की मस्जिद है। यह पूरी तरह से चौकोर मोटे पत्थरों को जोड़कर बनायी गई है। पटना की तीसरी सबसे पुरानी मस्जिद है। इंडो–अफगान स्थापत्य का यह बेहतरीन नमूना है। 1621 ई. में जहाँगीर के बेटे परवेज ने इसका निर्माण करवाया था। इसका अन्य नाम सैफ खान की मस्जिद और चिम्मनी घाट की मस्जिद है।

दरभंगा हाउस : यह गंगा के कछार पर अवस्थित है, इसे नवलखा भवन और बाँकीपुर पैलेस भी कहते हैं। इसका निर्माण दरभंगा के महाराज कामेश्वर सिंह के पिता लक्ष्मेश्वर सिंह ने अंग्रेज वास्तुकार डॉ. एम. ए. कोरनी से करवाया था। गंगा के तट पर अवस्थित इस प्रासाद में पटना विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर कला विभाग हैं। यह दो ब्लॉकों में बँटा हुआ है–राजा ब्लॉक एवं रानी ब्लॉक। राजा ब्लॉक में स्त्रियों का एवं रानी ब्लॉक में पुरुषों का प्रवेश वर्जित था। इसके परिसर में एक काली मन्दिर है जहाँ राजा कामेश्वर सिंह खुद पूजा–अर्चना किया करते थे। काली मंदिर की एक खास विशेषता है कि इसमें यूप है, यूप पर ही पशुओं की बलि दी जाती है। मान्यता है कि इस मंदिर में आकर सबकी मनोकामना पूरी होती है। मैथिली स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है, इस भवन से पढ़कर निकलने वालों का गौरवमय इतिहास रहा है, इस भवन में शिक्षा लेनेवाले शिक्षार्थियों के बीच यह तकिया कलाम प्रचलित रहा है कि 'बनेंगे तो कलक्टर नहीं तो मास्टर'।

पटना कॉलेज, पटना : पटना कॉलेज की स्थापना 09 जनवरी 1863 को हुई। 1863 के पहले यह डच ईस्ट इंडिया कंपनी का सोडा फैक्टरी हुआ करता था। कला विषयों के अध्ययन के लिए यह बिहार का ऑक्सफोर्ड माना जाता है। यह अपने आरंभिक काल में आवासीय महाविद्यालय था। सीटों की संख्या तो बढ़ी छात्रावासों की संख्या नहीं बढ़ने के कारण अब इसके छात्रों को बाहर रहना पड़ता है। सिविल सर्विसेज हो या उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापकों के चयन का सवाल हो, लगभग दो तिहाई स्थान इसी पटना कॉलेज एवं दरभंगा हाउस के प्रतियोगियों से भरे जाते रहे हैं।

खुदाबख्श लाईब्रेरी : अशोक राजपथ पर स्थित यह राष्ट्रीय पुस्तकालय 1891 में स्थापित हुआ। मौलबी खुदा बख्श खान ने इस लाइब्रेरी की स्थापना अपने पिता मौलबी मुहम्मद बख्श द्वारा सौंपी गई लगभग 1400 पांडुलिपियों एवं 300 दुर्लभ ग्रंथों से की थी। मौलबी मोहम्मद बख्श का भारत में इस्लामिक साहित्य में योगदान को लेकर वही सम्मान हासिल है जो बौद्ध साहित्य को लेकर राहुल सांकृत्यायन को मिलता है। मौलबी बख्श शाह के पिता शाह आलमगीर की सेवा में किताबों को सुरक्षित रखने और रिकार्ड लिखने का काम करते थे। पिता के सानिध्य में मौलबी मुहम्मद बख्श को किताबों का चस्का लगा, कुछ पुस्तकें माँगकर, कुछ चुराकर छपरा के अपने गाँव उखाई में भेजने–लाने लगे। जब बड़े हुए तो वकील बने, किताबों का चस्का लगा रहा और मृत्यु के समय 1776 को अपने पुत्र खुदाबख्श को अपनी पुस्तकों की निजी लाईब्रेरी को सौंपकर एक सार्वजनिक लाइब्रेरी स्थापित करने का निर्देश देकर मर गये। उनके पुत्र खुदाबख्श जो स्वयं एक प्रसिद्ध वकील थे, लगभग 2000 और पुस्तकें खरीदकर दो मंजिला इमारत में खुदाबख्श लाइब्रेरी की स्थापना की। इस लाइब्रेरी में अरबी और फारसी की दुर्लभ पांडुलिपियाँ एवं पुस्तकें तथा राजपूत शैली के अनेक चित्र संग्रहीत हैं। इस्तांबुल सार्वजनिक ग्रंथालय के बाद पांडुलिपियों के मामले में विश्व में दूसरा और भारत में पहला स्थान रखता है। कुरान की अति लघुतम प्रति भी यहाँ उपलब्ध है।

गाँधी मैदान : वर्त्तमान शहर के मध्य भाग में स्थित इस विशाल मैदान को पटना का दिल कहा जाता है। मैदान बाँकीपुर मैदान या पटना लॉन्स कहलाता था। 1918 में गांधी जी ने नीलहों के खिलाफ चम्पारण सत्याग्रह के लिए इसी मैदान में जनसभा की थी तब से इस मैदान का नाम गाँधी मैदान पड़ गया। यह मैदान ऐतिहासिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों का गवाह रहा है। 1938 में इसी मैदान से मोहम्मद अली जिन्ना ने अलग पाकिस्तान की माँग की और पाकिस्तान बना। 1974 में इसी मैदान से जयप्रकाश नारायण ने छात्र आंदोलन का बिगुल फूँका और तानाशाह बन चुकी इंदिरा गाँधी को सत्ता से दूर किया। 1989 में इसी मैदान में राममंदिर के लिए रथयात्रा पर निकले लालकृष्ण आडवाणी ने एक बड़ी जनसभा को संबोधित करने के बाद आगे बढ़े और लालू के आदेश पर मसानजोर में अरेस्ट कर लिये गये, जिसकी वजह से भयंकर सांप्रदायिक दंगे हुए, लालू यादव मुसलमानों के सबसे बड़े पैरोकार और आडवाणी लौह पुरुष की पदवी पाये। प्रतिक्रिया स्वरूप, बाबरी मस्जिद जमींदोज हुआ। जनसभाओं, सम्मेलनों तथा राजनीतिक रैलियों के अतिरिक्त यह मैदान पुस्तक मेला, कृषि मेला तथा दैनिक व्यायाम का भी केन्द्र है। इसके चारों ओर अति महत्त्वपूर्ण सरकारी और प्रशासनिक इमारतें तथा मनोरंजन केन्द्र हैं और मध्य में गाँधी जी की देश की सबसे बड़ी प्रतिमा स्थापित है।

विजय निकेतन वनाम हेडगेवार भवन : हेडगेवार भवन राजेन्द्रनगर, रोड नंबर 6 ई में स्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्यालय है, इसे आम तौर पर विजय निकेतन के नाम से जाना जाता है जबकि विजय निकेतन एवं हेडगेवार भवन के बीच कोई संबंध नहीं है। हेडगेवार भवन राजेन्द्रनगर में है तो विजय निकेतन सालिमपुर अहरा के राष्ट्रवादी वृद्ध दंपति के घर का नाम है। विजय की मृत्यु के बाद उसकी स्मृति में उनके पिता ने श्रद्धांजलि स्वरूप अपने निवास–स्थान का नाम रखा था, जो भट्टाचार्या रोड मोड़ के छोर पर गली में स्थित है। जिसमें पचास के दशक में संघ का कार्यालय हुआ करता था। संघ की आद्य गतिविधियाँ स्वर्गीय विजय के मकान से संचालित होती थी। विजय निकेतन में चलनेवाले संघ कार्यालय में आने–जाने वाले स्वयंसेवकों की जिह्वा पर विजय निकेतन ऐसे रच–बस गया कि अभी भी पीछा ही नहीं छोड़ रहा। 70 के दशक में संघ कार्यालय विजय निकेतन से निकलकर अशोक सिनेमा के मालिक माननीय कृष्णबल्लभ प्रसाद सिंह के कदमकुआँ के पुरातन आवास में व्यवस्थित हुआ, जहाँ आज सरस्वती विद्या मंदिर है। इमरजेंसी में इसे सील कर दिया गया। इमरजेंसी हटने के बाद हेडगेवार स्मारक न्यास समिति का गठन हुआ और कैलाशपति मिश्र की पहल पर तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर सरकार द्वारा प्रदत्त भूमि पर निर्मित हेडगेवार भवन में 1980 से संघ कार्यालय व्यवस्थित है। यह तिमंजिला भवन है, पूरे बिहार की सभी राष्ट्रवादी गतिविधियों का यह केंद्र है। इसमें संघ के अन्य अनेक आनुषंगिक संगठनों का, जिनका प्रांतीय कार्यालय अभी सुव्यवस्थित नहीं हो पाया है, उनकी भी गतिविधियाँ यहीं से संचालित होती है। हिंदुत्व की अलख जगानेवाला एवं सेवाभाव में तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित का भाव रखने वाले निष्ठावान स्वयंसेवकों की एक विशाल संख्या तैयार करने में हेडगेवार भवन का अमूल्य योगदान है। ये स्वयंसेवक राज्य भर में कहीं भी कोई प्राकृतिक, बाढ़, भूकंप, दुर्घटना आदि जैसी किसी भी आपदा में सबसे पहले पहुँचकर समर्पित सेवा–भाव से सेवा कार्य में लग जाते हैं। हेडगेवार भवन के दीवार से सटे ही स्वदेशी जागरण मंच का प्रांतीय कार्यालय है, जहाँ देश की वर्तमान आर्थिक दुरवस्था की चिंता एवं भविष्य के लिए चिंतन क्रिया की धारा प्रवाहित होती है।

गोलघर : 1770 ई. के भयंकर अकाल में लगभग एक करोड़ लोग भूखमरी के शिकार हुए थे। भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति न हो इसके लिए बंगाल के गवर्नर वारेन हेस्टिंग्स ने अन्न भंडारण के लिए गोलघर के निर्माण की योजना बनाई। ब्रिटिश इंजीनियर कैप्टन जॉन गार्स्टिन ने अनाज भंडारण के लिए गोलघर के निर्माण का कार्य 20 जनवरी 1784 को शुरू करवाया जो 20 जुलाई, 1786 को पूर्ण हुआ। गोलघर अपनी खास आकृति के लिए प्रसिद्ध है। इसका आधार 125 मीटर और ऊँचाई 29 मीटर है। इसकी दीवारों की मुटाई 3.6 मीटर है। 26 मीटर की ऊँचाई तक ईंट का एवं ऊपर में 3 मीटर पूरी तरह पत्थर का बना हुआ है। इसमें एक भी स्तंभ नहीं है। अनाज भरने के लिए शीर्ष पर 2 फीट 7 ईंच का सुराख था, जिसे बाद में बंद कर दिया गया। इसमें एक साथ 1.40 लाख टन अनाज का संग्रहण किया जा सकता है। दोनों तरफ बनी 145 सीढ़ियों से ऊपर जाकर कल–कल बहने वाली गंगा के साथ पूरे पटना का नजारा दिखाई पड़ता था। गोलघर पटना शहर का प्रतीक चिह्न बन गया है। गोल गुंबदाकार आकृति के कारण इसकी तुलना मोहम्मद आदिलशाह के मकबरे से की जाती है। गोलघर के अंदर एक आवाज 25–30 बार प्रतिध्वनित होती है। यह राज्य संरक्षित स्मारक है।

गाँधी संग्रहालय : गोलघर के सामने बाँकीपुर बालिका उच्च विद्यालय के बगल में महात्मा गाँधी संग्रहालय है, यहाँ गाँधी जी की स्मृतियों से जुड़ी चीजों का नायाब संग्रह है। हाल में इसी परिसर में नवस्थापित चाणक्य राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय का अध्ययन केंद्र भी था जो आज अपने भवन में मीठापुर बस स्टैंड के पास चला गया है।

श्रीकृष्ण विज्ञान केंद्र : श्रीकृष्ण विज्ञान केंद्र या विज्ञान परिसर संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत कार्यरत स्वायत्तशासी संस्था राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् की एक संबद्ध इकाई है। बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह के नाम पर बालकों, विद्यार्थियों एवं आमजन में विज्ञान के प्रति अभिरूचि पैदा करने के उद्देश्य से 1978 में निर्मित हुआ। बालकों के लिए काफी ज्ञानवर्धक शैक्षणिक स्थल है। विज्ञान एवं प्रावैधिकी के विकास को जनोन्मुखी बनाना, विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच की त्वरा पैदा करना, कृषि एवं उद्योग तथा मानव कल्याण में विज्ञान का उपयोग विज्ञान केंद्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य है। यह विज्ञान के विकास के मॉडलों–प्रतिदर्शों का संग्रहालय भी है, जिसमें वैज्ञानिक विकास के मॉडलों एवं उनके डिजाइन की प्रदर्शनी, उनपर उच्च स्तरीय व्याख्यान करवाना, संगोष्ठी, वार्ता, विज्ञान शिविर आयोजित करने के साथ विज्ञान संबद्ध अनेक कार्यक्रम करवाना विज्ञान केंद्र का महत्वपूर्ण कार्य है। नियमित रूप से प्रतिदिन, तारामंडल शो, विज्ञान प्रदर्शनी, त्रि–आयामी विज्ञान प्रदर्शनी, डिजिटल तारामंडल जैसे लाईट एवं साउण्ड शोज के कार्यक्रमों के आयोजन से विज्ञान की गुत्थियों को सुलझाना इस केंद्र का मकसद है। बच्चों के लिए पटना में इससे बढ़कर रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक स्थल कोई और नहीं है। स्कूली बच्चों के बीच विज्ञान केंद्र खासा लोकप्रिय है।

पटना संग्रहालय : पटना और आसपास के ऐतिहासिक अवशेषों के संग्रहण के लिए बनाया गया है। इसे जादूघर के नाम से भी जाना जाता है। बिहार की सारस्वत एवं बौद्धिक समृद्धि का प्रतीक है। इसकी स्थापना 1915 ई. में बिहार के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश के आवास में गवर्नर चार्ल्स एस. बेली की अनुशंसा पर हुआ। वर्त्तमान म्यूजियम 01 फरवरी, 1929 को बनकर तैयार हुआ। मार्च 1929 को बिहार–उड़ीसा के तत्कालीन गवर्नर लैंसडाउन स्टीवेंसन के द्वारा इसका उद्घाटन हुआ। मुगल–राजपूत–संयुक्त शैली में बना है। भवन का आकर्षण चारों कोनों पर गुंबद, आकर्षक छतरी और झरोखा है। म्यूजियम में व पाषाणकालीन पुरावशेषों और चित्रों, दुर्लभ सिक्कों, पांडुलिपियों, बुद्ध अस्थि अवशेष कलश, राहुल सांकृत्यायन द्वारा समर्पित तिब्बत से लाई गई दुर्लभ पांडुलिपियाँ, दीदारगंज की यक्षिणी तथा लगभग 30 करोड़ वर्ष पुराने पेड़ के तने का फॉसिल म्यूजियम के आकर्षण हैं। प्राचीन पटना के हिन्दू तथा बौद्ध धर्म की कई निशानियाँ हैं। संग्रहालय के परिसर में ही काशीप्रसाद जायसवाल शोध संस्थान है। संग्रहालय के कतिपय अवशेषों से जिसमें दीदारगंज की यक्षिणी भी है, को स्थांतरित कर, कतिपय आधुनिक पुरातात्विक अवशेषों से 2015 में बेली रोड पर उच्च न्यायालय के बगल में आधुनिकतम सुविधाओं से लैश, हाई–फाई बिहार संग्रहालय का विकास किया गया है।

पटना तारामंडल : पटना के इंदिरा गांधी विज्ञान परिसर में ताराघर या तारामंडल स्थित है। यह एशिया का सबसे बड़ा प्लैनेटोरियम है। इसका निर्माण 20 जुलाई, 1989 को बिहार के मुख्यमंत्री की अनुशंसा पर 11 करोड़ की लागत से हुआ हे। 01 अप्रैल, 1993 को जनता के लिए खोला गया। सेल्यूलाइड फिल्म के पारंपरिक ऑप्टो–मैकेनिकल प्रक्षेप का उपयोग करते हुए तारामंडल में खगोलीय पिण्डों को दर्शाया जाता है।

निष्कर्ष :

इस प्रकार इस शोध–पत्र के अध्ययनों से स्पष्ट है कि पाटलिपुत्र का फैलाव छोटी–बड़ी पहाड़ी से पटना सचिवालय तक था और तत्कालीन विश्वप्रसिद्ध इस प्राचीन नगर का अधिकांश और प्रधान अंश गंगा में विलीन हो चुका है। मगध नरेश अजातशत्रु के समय पाटिलग्राम ने पाटलिपुत्र नगर का रूप धारण किया। मौर्यकाल के अंतिम चरण में पाटलिपुत्र के निखार में कमी आने लगी। शुंगकाल में इस नगर का प्रशासनिक महत्त्व शेष रहा। पाटलिपुत्र के धरोहरों का अवलोकन से स्पष्ट है कि यह अपने दामन में ऐतिहासिक पुरावशेषों को समेटे हुए है जो आज भी इसके अतीत की याद दिलाती है। साथ ही इस महत्त्वपूर्ण धरोहर से जुड़े विविध आयाम इसकी गरिमा में चार चाँद लगाने का काम कर रही है।

संदर्भ सूची :

1. वाशम, ए. एल. : अद्भुत भारत, आगरा, 1967
2. पाटिल, डी. आर. : एन्टीक्विटीयन रिमेन्स ऑफ बिहार, पटना, 1956
3. मुखर्जी, पी. सी. : एक्सकवेशन फ्रॉम दि साइट ऑफ पाटलिपुत्रा, कलकत्ता, 1920
4. राय, डॉ. दयानन्द : ''पाटलिपुत्र का इतिहास'', जानकी प्रकाशन, पटना, 1999
5. चौधरी, राधाकृष्ण : 'प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास', भारती भवन, पटना, 1976
6. प्रसाद, ओमप्रकाश : 'पाटलिपुत्र से पटना', काशी प्रसाद जयसवाल शोध संस्थान, पटना, 2010
7. सिंह, राजेश्वर प्रसाद : 'बिहार–अतीत के झरोखे से', दिल्ली, 1986
8. मेहता, श्री पृथ्वी सिंह : 'बिहार–एक ऐतिहासिक दिग्दर्शन', लहेरियासराय, 1940
9. दत्त, के. के. : 'बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास', (3 जिल्दों में), पटना, 1975
10. सिन्हा, ले. जेनरल एस. के. : 'पाटलिपुत्र : आरम्भ से आज तक', पटना नगर निगम, पटना, 1986
11. अहमद, कयामुद्दीन (सं.) : 'पटना थ्रू द एजेज', जानकी प्रकाशन, पटना, 1988